Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 1073–1081

PARASHURAM A MYSTERY

परशुराम एक रहस्य

Sadhna Kushwaha [1]

[1] Associate Professor, Swami Shraddhanand College, Delhi University

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.2084

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Violence! Counter-violence! And Parashuram is the name of someone burning in the fire of revenge. Parashuram literally means 'Axe wielding Ram'. It can be said that Parashuram is not a person but a violent thought, the fire of revenge. This fire destroyed the conscience and sensitivity of an ascetic. The question arises whether a person can become popular by establishing himself as a mass leader only on the basis of extreme violence?

Hindi: हिंसा! प्रतिहिंसा! और प्रतिशोध की आग में जलने का नाम है परशुराम। परशुराम का शाब्दिक अर्थ है 'कुल्हाड़ी वाले राम'। ऐसा कहा जा सकता है कि परशुराम कोई व्यक्ति नहीं एक हिंसक विचार है, प्रतिशोध की अग्नि है। इस आग ने एक तपस्वी के विवेक और संवेदना को भी नष्ट कर दिया था। प्रश्न उठता है कि क्या व्यक्ति केवल चरम हिंसा के बूते भी जन-नायक के रूप में स्थापित होकर लोकप्रिय हो सकता है?

1. प्रस्तावना

हिंसा! प्रतिहिंसा! और प्रतिशोध की आग में जलने का नाम है परशुराम। परशुराम का शाब्दिक अर्थ है ष्कुल्हाड़ी वाले रामष्। ऐसा कहा जा सकता है कि परशुराम कोई व्यक्ति नहीं एक हिंसक विचार हैए प्रतिशोध की अग्नि है। इस आग ने एक तपस्वी के विवेक और संवेदना को भी नष्ट कर दिया था। प्रश्न उठता है कि क्या व्यक्ति केवल चरम हिंसा के बूते भी जन.नायक के रूप में स्थापित होकर लोकप्रिय हो सकता हैघ्

जी हाँ! अवश्य हो सकता हैए जब उसका उद्देश्य पवित्र हो। क्योंकि यही परशुराम मालाबार के पारंपरिक संस्थापक हैं। ;परशुराम सम्बन्धी अनेक पुराकथाओं में जो पश्चिमी समुद्रतटीय क्षेत्रों में मिलती हैंए उनमें अनेक सैनिक शिविरों का विवरण मिलता हैए जहाँ उन्होंने बाहर से बुलाकर ब्राह्मण बसाए और स्थानीय निम्न जातियों को संस्कारित कर उन्हें ब्राह्मण बनायाद्ध और क्षत्रियों के वध का प्रायश्चित करने के लिए पुरोहित वर्ग के सदस्यों को वहाँ भूमि प्रदान की थीए जिन्हें वे उत्तर से लाए थे। परशुराम को समर्पित मंदिर पूरे भारत में पाए जाते हैं। हिमाचल के ख्यातिलब्ध विद्वान डॉण् पद्मचन्द्र कश्यय के अनुसार हिमाचल में शतद्रु नदी के किनारे पर दत्तनगरए नीरथए शिंगलाए शनैरी ;शनैड़द्ध लालसा ;लारसा या लादसाद्ध

ढाँडसाए निरमण्ड काओ और मुवैल ;कहीं.कहीं कल्गेल नाम भी मिलता हैद्ध में हड़प्पा कालीन बस्तियों की खोज हुई है।

प्रश्न यह है कि परशुराम क्या हैंघ् वे कोई ऋषि हैंंए भगवान हैं या कोई परम्पराघ् परशुराम रामायण में भी मिलते हैं और महाभारत में भीए उत्तर में भी मिलते हैं और दक्षिण में भी। सच तो यह है कि भारतीय पौराणिक इतिहास की महान विभूति परशुराम युगों.युगों से भारतीय ऋषि और देव परम्परा में एक पहेली बने रहे हैं। महाभारत और पुराणों के अनुसार उनकी गणना दशावतारों में की जाती है। विष्णु के दस प्रमुख अवतारों को दशावतार कहा जाता है। महाभारत एवं अन्य पुराणों में प्रचुर मात्रा में भगवान परशुराम जी का जीवन चरित्र मिलता है।

महापराक्रमी परशुराम का जन्म भार्गव राम के रूप में हुआ था। पुराणों में दर्ज है कि परशुराम का जन्म ब्राह्मण ऋषि जमदग्नि से हुआ था और उनकी पत्नी राजकुमारी रेणुकाए क्षत्रिय वर्ग के सदस्य थे। उनके सांसारिक गुरु योद्धा ऋषिए ऋषि विश्वामित्र थे।

हालांकि परशुराम के काल का निर्धारण करना बहुत कठिन है फिर भी भारतीय इतिहास परम्परा में कुछ ऐसे साक्ष्य विद्यमान हैं जिनके आधार पर हम परशुराम को इतिहासपुरुष कह सकते हैं। मतस्यपुराण में कहा गया हैए

ष्ष्एकोनविंश्यां त्रेतायां सर्वक्षत्र हन्तकोविभुः।

जामदग्न्यस्तथा षष्ठो विश्वामित्रपुरस्सरः।।ष्ष्1

मत्स्यपुराण में इनकी उपस्थिति स्पष्ट रूप से उन्नीसवें त्रेतायुग में बताई गई है। महाभारत के आदिपर्व में भी परशुराम और क्षत्रिय संघर्ष सम्बंधी घटनाएँ त्रेता और द्वापर के संधिकाल की बताई गई हैं.

ष्ष्त्रेता द्वापरयाःसंघौ रामः शस्त्रभृतां वरः।

असडुत्पार्थिव क्षत्रं जघानामर्षचोदितः।।ष्ष्2

हम कह सकते हैं कि कोई भी व्यक्ति कभी भी कठोर हृदयए क्रूरए क्रोधी और हिंसक नहीं होता हैए विशेष रूप से जिसने ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया हो। क्षमाए दयाए दानए आत्म संयमए सत्यए करुणाए परोपकारए अहिंसा ब्राहमण के जन्मजात स्वभाविक गुण होते हैं। ब्राह्मण के यही पौराणिक गुण और संस्कार बताये गए हैं। बचपन में भगवान परशुराम जी में ब्राह्मण के ये सभी गुण विद्यमान थे। वैदिक सनातन धर्म के कठोर नियमों का पालन करते हुए ये ऋषि सादा जीवन व्यतीत करते थे। परशुराम का जन्म भार्गव वंशीय ब्राह्मण जमदग्नि के घर में हुआ थाए ये अपने पिता की पाँचवीं सन्तान थे। भृगुकुल में जन्म लेने पर भी ये क्षत्रिय परम्परा से जुड़े हुए थे।

अक्षय तृतीया

वैसे तो अक्षय तृतीया से ढेर सारे तथ्य जुड़े हैं फिर भी यह सोचा जा सकता है कि अक्षय तृतीया का परशुराम से क्या लेना देनाघ् महज इतना संयोग है कि आचार्य परशुराम का आज ही के दिन जन्म हुआ था। पौराणिक तथ्यों के अनुसार आज ही के दिन भगवान परशुराम का जन्म हुआ था। परशुराम ही नहीं भोजन की देवी अन्नपूर्णा का जन्म की भी मान्यता आज ही है। माँ गंगा का अवतरण भी आज ही हुआ था। द्रौपदी को चीरहरण से कृष्ण ने आज के ही दिन बचाया था। कुबेर को आज ही के दिन खजाना मिला था। सतयुग और त्रेतायुग का प्रारम्भ आज के दिन हुआ था। कृष्ण और सुदामा पहली बार अक्षय तृतीया पर ही मिले था। ब्रह्माजी के पुत्र अक्षय कुमार का जन्म आज ही के दिन हुआ था। आज ही के रोज महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ था। तो हम फिर से मूल विषय पर आते हैं।

परशुराम के जन्म स्थान के विषय में भी विद्वानों का मतभेद है। कुछ विद्वानों का मत है कि मध्य प्रदेश का जानापाव नामक स्थान महर्षि परशुराम जी की जन्म स्थली है । यह स्थान अपनी प्राकृतिक सुंदरता और साहसिक मार्गों के लिए काफी लोकप्रिय है। जानापाव जिसे जानापाव कुटी के नाम से भी जाना जाता है। इंदौर से करीब 28 किमी दूरए महू तहसील के हासलपुर गाँव में समुद्र तल से 854 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है और विंध्यांचल पर्वतमाला की सबसे ऊँची चोटी है। मान्यता है कि जानापाव में जन्म के बाद भगवान परशुराम शिक्षा ग्रहण करने कैलाश पर्वत चले गए थे जहांँ भगवान शंकर ने उन्हें शस्त्र.शास्त्र का ज्ञान दिया था। जानापाव की पहाड़ियों के ऊपर एक शिव मंदिर है जहाँ माना जाता है कि

परशुराम ने शिव की पूजा की थीए आश्रम को जमदग्नि आश्रम के नाम से जाना जाता हैए जिसका नाम उनके पिता के नाम पर रखा गया था।

कुछ विद्वान परशुराम का जन्म स्थान उत्तर प्रदेश मेंए शाहजहाँपुर जिले में जलालाबाद स्थान पर बताते हैंए उनके अनुसार जमदग्नि आश्रम वर्तमान जलालाबादए शाहजहाँपुर क्षेत्र में था। जहाँ आज भी इनका बहुत ही प्राचीन मंदिर बना हुआ हैए जबकि अन्य मतानुसार हिमाचल के सिरमौर जिले में रेणुका नामक तीर्थस्थल इनका जन्म स्थान कहा जाता है। इस स्थान पर रेणुका नाम की एक झील भी विद्यमान है जो हमेशा ही निर्मल जल से भरी रहती है। झील के निकट ही पहाड़ के ऊपर जामू नाम की धार पर जमदग्नि आश्रम भी है जहाँ महर्षि जमदग्नि तप किया करते थे। यहीं पर सहस्त्रबाहू के द्वारा जबरदस्ती आश्रम से कामधेनु गाय ले जाने पर जमदग्नि और सहस्त्रबाहु का युद्ध हुआ जिसमें सहस्त्रबाहु ने जमदग्नि ऋषि को मार डाला। इस घटना से दुखित रेणुका साथ के ताल में कूद गई। जब अन्य ऋषियों ने रेणुका को झील से बाहर निकाला तो उसने परशुराम को पुकारा जो उस समय बद्रीधाम से लौट रहे थे।3 रेणुका जी नामक इस स्थान में हर साल एक भव्य मेला भी लगता है। इसके अतिरिक्त कुछ विद्वान जमदग्नि का स्थान कुल्लू जनपद के मलाणा गाँव में मानते हैं। जमलू देवता का मन्दिर स्थापित है। जमलू देवता अर्थात जमदग्नि ऋषि।

लोकगाथाओं एवं लोक इतिहास के अनुसार जमलू देवता ठारां ;अट्ठारहद्ध करडू देवताओं के साथ मानसरोवर से स्पिति के ष्हंसाष् गाँव होते हुए हामटा नामक स्थान पर पहुँचे। हामटा से जब वे मलाणा आ रहे थे तो चन्द्रखणी पर्वत से चली वेगवान पवन के कारण वे तितर.बितर होकर अलग.अलग स्थानों पर गये और वहीं पर स्थापित हो गये। ये देवगण जहाँ.जहाँ स्थापित हुए वे बारह स्थान देउघरे ;देवघर स्थलद्ध कहलाते हैं।4

हिमाचल के यशस्वी लेखक डॉण् हरिराम जस्टा ने अपनी पुस्तक ष्हिमाचल की लोक संस्कृतिष् के अध्याय ष्लोक देवताष् में उल्लेख किया है ष्तीव्र गति से आगे बढ़ते हुए इस वैज्ञानिक युग में भी प्रत्येक देश की लोक संस्कृति ने अपने लोक देवी.देवताओं की स्थापना की है। कोई देश या क्षेत्र जितना प्राचीन होगाए उसके देवी.देवता भी उतने ही प्राचीन होंगे। प्रत्येक जनपद या देश इन देवी.देवताओं पर इसलिए गर्वित अनुभव करता है क्योंकि मिथकों के प्रतीक रूप से उसके पूर्वजों की धड़कनेंए भावनाएँ और आकांक्षाएँ सजीव रूप से उभरी होती हैं। जिस जनपद या देश का अपना कोई देवी.देवता नहीं होताए उसने किसी दूसरे देश के पुराने देवी.देवता को अपना लिया हैए क्योंकि बिना देवमाला के उसे अपनी सभ्यता एवं संस्कृति अधूरी और धरती से कटी हुई और वायु में लटकी हुई जान पड़ती है। यही कारण है कि अपने इतिहास के स्वर्णिम काल में इंग्लैण्डए फ्रांस और यूरोप के दूसरे देशों ने यूनानी देवी.देवताओं को अपना लिया। इसलिए हिमाचल प्रदेश के संदर्भ में यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि लोकजीवन में प्रचलित आख्यानोंए पुराकथाओं और अन्य लोकवार्ताओं की कड़ियों का विस्तृत एवं वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत हो।ष् डॉण् हरिराम जस्टा के अनुसार लोक संस्कृति में पौराणिक ऋषि.मुनियों को भी देवता का स्थान दे दिया जाता हैए ष्इनमें मनुए व्यासए वशिष्ठ और जमदग्नि आदि ऋषियों की गणना की जा सकती है।5

परशुराम का व्यक्तित्व

परशुराम को भार्गव राम या ष्पुरोहित भृगु कबीले का रामष् भी कहा जाता हैए जो उन्हें राघव राम या ष्रघुवंश के रामष् से अलग करता है। अब जरा आइये परशुराम के जीवन पर एक नज़र डालें। जानते हैं कि कौन थे परशुराम और वह घटना क्या थी जिसने एक इतिहास गढ़ाघ्

हम पूर्व में कह चुके हैं कि परशुराम की माता का नाम रेणुका था। पुराकथाओं के अनुसार रेणुका की एक बहन वेणुका भी थी। वेणुका हैहयवंशी राजा कार्तवीर्य अर्जुन ;सहस्त्रबाहुद्ध को ब्याही गई थी। सहस्त्रबाहु का पिता कार्तवीर्य और स्वयं सहस्त्रबाहु दोनों ही निरंकुश एवं क्रूर प्रकृति के शासक थे। इसी सहस्त्रबाहु के कई पुत्र थे जो क्रूर तो थे ही मूर्ख भी थे। एक बार सस्त्रबाहु शिकार के लिए वन में गया। निकट ही ऋषि जमदग्नि का आश्रम था। ऋषि ने राजा का भरपूर स्वागत किया। राजा को इस बात पर महान आश्चर्य हुआ कि एक बनवासी के पास इतना धन कहाँ से आया कि वह राजा के लाव.लश्कर का अतिथ्य कर पायेघ् तुरन्त गुप्तचर छोड़े गयेए जिन्होंने सूचना दी कि जमदग्नि के पास कामधेनु गाय हैए जो इन्द्र ने यज्ञ की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए ऋषि को दी है। इस चमत्कारी गाय से जो भी माँगो वह देती है। लोभी और दुष्ट प्रकृति राजा ने तुरन्त ही जमदग्नि से वह गाय माँग लीए जिसे देने से ऋषि ने

असमर्थता प्रकट की। तब सहस्त्रबाहु ने उस गाय को छीनना चाहा। यह देख जमदग्नि ने गाय इन्द्र को लौटा दी।

गाय को इस तरह हाथ से जाता देखकर सहस्त्राबाहु ने उसके पाँव में तीर मार कर उसे घायल कर दिया। घायल और क्रुद्ध कामधेनु ने कार्तवीर्य पर आक्रमण कर दिया। इस पर राजा ने इसे ऋषि का चमत्कार समझ उनका सिर काट दिया। पति का कटा सिर देख परशुराम की माता रेणुका के विलाप करने पर परशुराम दौड़े आये। पिता का मृत शरीर देखकर उन्होंने पृथ्वी को क्षत्रिय विहीन कर देने की शपथ ली।

अन्य मतानुसार रेणुका अपनी बहन वेणुका से अक्सर ही अपने आश्रम की प्रशंसा करती थी। वेणुका के मन में उसे देखने की इच्छा उत्पन्न हुई। इन्हीं दिनों ऋषि जमदग्नि ने एक यज्ञ किया। रेणुका ने पति के समक्ष बहन और बहनोई को भी बुलाने का आग्रह किया। जमदग्नि थोड़ी ना.नुकर के बाद मान गये और आश्रम में जमदग्नि और सहस्त्रबाहु विवाद में ऋषि जमदग्नि मारे गए। कहा जाता है कि बाद में रेणुका के विलाप करने पर कुबेर ने अमृत की बूँद टपका कर उन्हें जीवित किया। पुनर्जीवन प्राप्त करने के बाद ऋषि जमदग्नि को यह भ्रम हुआ कि कहीं रेणुका ने उनका वध करने के लिए ही तो अपने बहन और बहनोई को बुलाया था अतः उन्होंने अपने पुत्रों से रेणुका का वध करने को कहाए किन्तु कोई भी इस दुष्कर्म के लिए तैयार नहीं हुआ। परशुराम उस समय कोंकण में तप कर रहे थे। कुछ विद्वानों का कहना है कि वे उस समय बद्रीनाथ से आए थेए वहाँ से उन्हें बुलाया गया। उन्होंने तुरन्त ही पिता की आज्ञा का पालन करते हुए माँ रेणुका और भाइयों का वध कर दियाए फिर पिता को अपने आज्ञाकारी होने से प्रसन्न होने पर सभी को पुनर्जीवन देने को कहा और पिता से यह भी वरदान मांगा कि उन्हें यह घटना याद न रहे। अन्य मतानुसार ऋषि जमदग्नि ने चार पुत्रों को चेतनाशून्य ही किया था।

यह बात सर्व विदित है कि पिता की निर्मम हत्या ही परशुराम के क्रोध का कारण बनी और इसी कारण उन्होंने इन क्षत्रियों के वश का संकल्प लिया था। रेणुका जिस समय छाती पीट.पीट कर विलाप कर रही थी और कह रही थी कि ष्हे परशुराम धिक्कार है तुझे और तेरे परशु कोए तेरे होते हुए एक क्षत्रिय राजा तेरे पिता का वध कर गया।ष्ष् उस समय परशुराम माँ को साँत्वना देते हुए ष्उनष् क्षत्रियों का समूल नाश करने का वचन दे रहे थे। रेणुका ने इक्कीस बार छाती पीटी और परशुराम ने इतनी ही बार माँ का हाथ पकड़ कर अपना वचन दोहराया। कुछ विद्वानों का मत है कि परशुराम ने अपने तपोबल से पिता को जीवित कर दिया जबकि अन्य का कथन है कि रेणुका पति के साथ ही सती हो गई। इसके विपरीत महाभारत के अनुसार परशुराम साथ के जंगल से समिधा लेकर लौटे तो पिता को मृत पायाए रोते हुए उनके क्षौर कर्म किये। इस प्रसंग में रेणुका की चर्चा ही नहीं है।6

ब्रह्मपुराण में जमदग्नि और परशुराम को अतिविशिष्ट ब्राह्मण के रूप में दर्शाया गया है जो युद्ध के विरोधी रहे हैं। परिस्थितियों से विवश परशुराम जब अस्त्र उठाते भी हैं तो दिव्य कृपा से ही उठाते हैं। ब्रह्मपुराण में परशुराम सम्बंधी पश्चिमी भारत में प्रचलित अनेक लोककथाएँ भी शामिल हैं। यहाँ सागर और उसके वंशजों से परशुराम का सम्बंध जोड़ने से उनका कोंकण वाला आख्यान स्पष्ट हो जाता हैए जिसमें कहा गया है कि उनके कहने से सागर पीछे हट गया और केरल तथा कोंकण का प्रादुर्भाव हुआ। केरल में यह दन्तकथा प्रचलित है। प्राचीन भारतीय साहित्य और भवभूति के उल्लेख के अतिरिक्त भी परशुराम की उपलब्धियों पर अन्य भारतीय भाषाओं में भी रचनाएँ उपलब्ध हैं। परशुराम का उत्तर गमन इसके बाद की घटना कही जाती है।

यदि इनकी वंशावलि देखी जाए तो ऐसा क्यों हुआए का उत्तर हमें स्वयंमेव ही मिल जाता है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि इनके पिता जमदग्नि विश्वामित्र की बहन सत्यवती के पुत्र थे। इस तरह विश्वामित्र जमदग्नि के मामा हुए जो स्वयं क्षत्रिय थे। परशुराम की दादी सत्यवतीए राजा गाधि की बेटी थीं।7 उनका विवाह परशुराम के दादा ऋचीक से हुआ था। इसके बाद जमदग्नि का विवाह इक्ष्वाकु वंश की राजकुमारी रेणुका से हुआए अतः परशुराम की धमनियों में क्षत्रिय वंश का लहू उनके क्रोधी स्वभाव का सबसे बड़ा कारण रहा है।

महाभारत के वन पर्व के अनुसार रेणुका के पिता का नाम प्रसेनजित थाए ष्ष्महातपस्वी जमदग्नि ने वेदाध्ययन के नियमानुसार सभी वेदों को कंठस्थ कर लिया। फिर उन्होंने राजा प्रसेनजित के पास जाकर उनकी पुत्री रेणुका के लिए याचना की और राजा ने सहर्ष उन्हें अपनी बेटी ब्याह दी।ष्ष् 8

किन्तु पुराकथाओं के अनुसार ये राजा वेणु की पुत्री थीं। परशुराम और कार्तवीर्य के मध्य हुए युद्धों के विस्तृत वर्णन निःसन्देह महाभारत में उपलब्ध हैंए परन्तु उनमें जगह की विभिन्नता भी दृष्टिगोचर होती है। उदाहरणार्थ अरण्य पर्व में भार्गव के अधिकार में कामधेनु की घटना के वर्णन को आवश्यक नहीं समझा गया। भृगु को कार्तवीर्य के पुजारी होने और उनकी विशालता के कारण ही ष्भार्गव स्मृद्ध हुएष् की बात का वर्णन है। अर्थात् भार्गव अत्यन्त समृद्ध थे यह सिद्ध होता है। अर्थात भृगुवंशी हैहयों के पुरोहित भी थे। हिमाचल के डॉण् हरिराम जस्टा के अनुसार समय बदला और कार्तवीर्य के वंशजों को धन की आवश्यकता पड़ी और वे भृगुवंशियों के पास सहायता के लिए पहुँचे उनके घर में भूमि में दबाया हुआ धन मिला। किन्तु जब हैहय वंशियों से भृगुवंशियों ने अपना धन वापस मांगा तो उनमें संघर्ष हुआ।9

परशुराम में क्षत्रिय गुण मातृपक्ष की देन थे। भृगुवंशी होने के कारण वे समाज सुधारक और दयालु भी रहे हैं। परशुराम के जीवन का अध्ययन करने पर यह तथ्य एकदम स्पष्ट हो जाता है कि परशुराम ने पूरे भारत का भ्रमण कर विभिन्न स्थानों पर कई बार भीषण तप भी किया है। वस्तुतः ऋषिकुल में पैदा हुए परशुराम के चरित्र की विशेषता समाज कल्याण तथा उत्थान का दृष्टिकोण उनके कार्यों से भली भान्ति झलकता है। बदले की आग में जलने वाले ऋषि का चरित्र दिखए जाने के कारण परशुराम के प्रति लोगों में एक हिंसक साधु की धारणा बन गयी। जो शायद उतनी सही न हो। क्योंकि परशुराम वेद और नीति में भी पारंगत थे। ब्रह्मास्त्र समेत विभिन्न दिव्यास्त्रों के संचालन में भी उनका कोई सानी नहीं था। उन्होंने एकादश छन्दयुक्त ष्शिव पंचत्वारिंशनाम स्तोत्रष् भी लिखा।

उन्होंने महर्षि विश्वामित्र एवं ऋचीक के आश्रम में रह कर शिक्षा पायी थी। परशुराम के कठिन तप से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उन्हें कल्प के अंत तक तपस्यारत भूलोक पर रहने का वर दिया। शायद इसीलिएए

ष्अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणःए

पः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः।ष् कहा गया है।

वैदिक काल में जब ऋषिगण राजा और उसके राज्य के कल्याण और लाभ के लिए यज्ञ करते थे तब बदले में वे राजाए ऋषियों और पुजारियों को गाउएँ उपहार में देकर उनकी आजीविका सुनिश्चित करते थे। इन्द्र का जमदग्नि को कामधेनु देना यही सिद्ध करता है। कालांतर में राजाओं और उनके पुजारियों में ऐसे सहजीवी संबंध नहीं रहे। यह बदलाव राम के आने से पहले हो गया लगता है।

परशुराम व्यवस्था के खिलाफ प्रतिपक्ष के योद्धा थे और व्यवस्था उन दिनों क्षत्रियों की ही होती थी। इसलिए वे उनके ख़लिफ़ खड्गहस्त थे। इससे यह धारणा बनी कि वे क्षत्रियों के खिलाफ हैं। परशुराम ने हैहय वंश के विनाश का संकल्प लिया। इस हेतु एक पूरी सामरिक रणनीति को अंजाम दिया। वाकचातुर्य और नेतृत्व दक्षता के बूते परशुराम को ज्यादातर चंद्र वंषियों ने समर्थन दिया। आभास होता है कि रघुवंषी राजा दशरथ और राजा जनक ने भी परशुराम को अपनी सेनाएँ दीं। परशुराम किसी सत्ता के अधिपति नहीं थेए इसलिए सेनाएँ और अस्त्र.शस्त्र उनके पास नहीं थे। परशुराम को इस बात का भी स्पष्ट अनुभव हुआ कि अन्याय का विरोध बिना जनाधार के सम्भव नहीं होता। ;महाभारत के अनुसार हैहयों के साथ उनके युद्ध में नागाओं ने भी परशुराम की सहायता की थीद्ध। रामायण में उनका मुक़ाबला राम के भाई लक्ष्मण और महाभारत में कर्ण से होता है। दोनों ने उन्हें वास्तविकता से परिचित कराया।

महाभारत के वन पर्व में उन्हें सीधे राम के सामने खड़ा दिखाया जाता है। यहाँ वे राम की चर्चा सुनकर उनकी परीक्षा लेने के लिए आते हैं। अथवा तो कहीं.कहीं यह भी चर्चा है कि उनको सहस्त्रबाहु आदि से लड़ने के लिए जनक और दशरथ दोनों ने सहायता की थी। परन्तु अभी हम यहाँ महाभारत के वन पर्व पर दृष्टि डालें तो हम पाते हैं कि परशुराम अयोध्यापुरी आये। दशरथ को उनके आने की सूचना मिली तो उन्होंने राम को उनके स्वागत हेतु सीमा पर भेजा। तो वहाँ राम ने सीधे ही इनका मान मर्दन किया।10

लोमश ऋषि वैशम्पायन जी को बता रहे हैं कि राम का सुयश सुनकर परशुराम जी को बड़ा कुतुहल हुआ और वे अपना परशु लेकर राम के पराक्रम की परीक्षा लेने अयोध्यापुरी को चल पड़े। उनके आगमन का समाचार जानकर राजा दशरथ ने उनके स्वागत के लिए राम के नेतृत्व में कुछ लोगों को नगर द्वार पर भेजा जहाँ उनका परशुराम से साक्षात्कार हुआ तो युवा राम को शस्त्रों से सुसज्जित देखकर वे कहने लगेए

ष्ब्राजकुमार! मेरा यह काल के समान कराल धनुष तुम में बल हो तो चढ़ाकर दिखाओ।ष्

राम ने वह धनुष उनके हाथ से लेकर तुरन्त ही चढ़ा दियाए फिर उसकी डोरी खींचकर भारी आवाज की। उस शब्द ध्वनि से पशु.पक्षी भी भयभीत हो गये। तब राम ने उनको समझाया कि इतना अहंकार उचित नहीं है। इसके अतिरिक्त भी उन्हें अपने बल से परिचित कराया जिससे परशुराम स्वयं को तेजहीन अनुभव करने लगे। हर प्रकार से संतुष्ट हाकर वे महेंद्र पर्वत पर तप करने चले गये।11

इन्हीं राजाओं ने सेनाएँ और हथियार परशुराम को दिए। तब कहीं जाकर महायुद्ध की पृष्ठभूमि तैयार हुई। यह महाभारत के उद्धरणों से भी आभास होता है। वस्तु स्थिति जो भी रही हो इस सारे प्रकरण के बाद हैहयवंश का समूल नाश करने से हुए रक्तपात ने उनके मन में खिन्नता को जन्म तो दिया हीए इसके साथ ही परशुराम ने शक्ति अर्जित करने के लिए दुर्गा की उपासना शुरू कर दी। शतद्रु तट के वनों में घोर तप करने के बाद देवी ने उन्हें कुछ अस्त्र.शस्त्र दियेए जिनसे दुष्टों का संहार हो सके।

ऋगवेद और अथर्ववेद में बहुत से ऐसे प्रसंग हैं जिनमें ब्रह्मतेज और क्षात्रतेज के मध्य हुए संघर्षों का वर्णन मिलता है। हम देखते हैं कि जब भी क्षत्रिय राजाओं ने अपनी मर्यादाओं का उल्लंघन किया अथवा करने की चेष्ठा की है तब.तब ब्राह्मण वर्ग द्वारा उनका विरोध किया गया है। परशुराम का यह अवतारी चरित्र क्षात्रतेज को नियन्त्रित करता और सुशासन का मार्ग प्रशस्त करता दिखाई देता है। यहाँ उनके द्वारा अपनी माता और भाइयों का वध भी इसी दिशा निर्धारण की एक कड़ी दिखाई देता है। सम्भवतया यहँ पुराणकारों का अभिप्राय यह भी रहा हो कि वे उस समय की उपलब्धियों यथा संजीवनी आदि को अंकित करना चाहते हों और इस घटना के माध्यम से वे अपने प्रयास में सफल भी रहे।

एक आदर्श ऋषि पत्नी का परपुरुष पर आसक्त होना और जमदग्नि जैसे ऋषि का क्रोधित होना और फिर अपने पुत्रों को माँ की हत्या का आदेश देना आदि घटनाएँ नितांत अस्वाभाविक हैं। ष्वेदों में ऋषि परम्परा में जमदग्नि के चरित्र में ऐसे अस्वाभाविक विकारों का कहीं उल्लेख नहीं मिलता।ष्12 अर्थात् वे बताना चाह रहे थे कि जमदग्नि ऋषि संजीवनी विद्या के ज्ञाता थे और परशुराम को यह ज्ञात थाए इसीलिए उन्होंने अविलम्ब सब की हत्या कर दी और आज्ञाकारी होने के फलस्वरूप पिता को प्रसन्न करके सभी को जीवित भी करा लिया। जबकि उनके बड़े भाइयों को सम्भवतया पिता का यह भेद ज्ञात नहीं था।

यहाँ हम परम्परा से हटकर यदि परशुराम को देखें तो हरिराम जस्टा का मत उचित जान पड़ता है। डॉण् जस्टा के अनुसार परशुराम ने पिता को यह समझाया कि रेणुका मात्र कौतुहल वश वहाँ रुकी थींए किसी कलुष के कारण नहीं। क्योंकि यदि परशुराम ने रेणुका की हत्या कर दी थी तब वह कौन.सी रेणुका थी जिसने जमदग्नि की मृत्यु पर विलाप किया था। अन्यथा हमें यह मानना पड़ेगा कि हमारे प्राचीन ऋषि चिकित्सा विज्ञान में आज से कहीं बहुत आगे थे। इसका प्रमाण जमदग्नि द्वारा मृत.संजीवनी का अपने परिवार पर उपयोग किया जाना होता है।

इन कथाओं से जमदग्नि आश्रम का अति समृद्ध होना भी प्रमाणित होता हैए क्योंकि वन में रहने वाले तपस्वियों द्वारा किसी राजा के लश्कर का अतिथ्य सहज नहीं लगता और इस अध्ययन से हम यह भी पाते हैं कि भृगुवंशियों के पास इतना धन था कि वह धरती में गाड़ा गया था। यही धन इन दोनों शक्तियों के टकराव का कारण बना।

यहाँ पर मुझे परशुराम से जुड़ी एक अन्य कथा अथवा परम्परा उद्धृत करना आवश्यक लगता है जिसका सम्बंध केवल मात्र वर्तमान हिमाचल से हैए इस परम्परा का नाम है भुण्डा महायज्ञ। जिसे किसी समय मुण्डयज्ञ कहा जाता था जो बाद में उच्चारण भेद के कारण भुण्डा हो गया। तो आइये तनिक इस मुण्ड यज्ञ अथवा भुण्डा महायज्ञ के बारे में भी जान लेते हैं।

हैहयों के साथ हुए संघर्ष में परशुराम ने स्पष्ट अनुभव किया कि लोक को साथ लिए बिना किसी भी निर्णायक स्थिति तक नहीं पहुँचा जा सकता। ऐसे में इस महायज्ञ का प्रारम्भ हुआ जिसे एक प्रकार से छापामार युद्ध ही कहा जा सकता है। अथवा एक प्रकार का जनजागरण भी कहा जा सकता है जो हर बारह वर्ष बाद आयोजित किया जाता था और इस यज्ञ में पकड़कर लाए अपराधियों के सिरों की बलि देने की प्रथा के ही कारण इसका नाम मुण्डयज्ञ पड़ गया। इस यज्ञ में भाग लेने वाले विद्वान कुम्भ में खोजे जाते और वहाँ से सपरिवार लाकर उन्हें शतद्रु ;वर्तमान में सतलुजद्ध के किनारे बसाया जाता। ऐसी बहुत.सी बस्तियाँ हिमाचल में हैं जो परशुराम की बसाई हुई कही जाती हैं।

आशा शैली अपनी पुस्तक हिमाचल बोलता है में लिखती हैंए ष्ष्शतद्रु तट के वनों में घोर तप करने के बाद देवी ने परशुराम को कुछ ऐसे दिव्य अस्त्र.शस्त्र दियेए जिनसे कि दुष्टों का संहार हो सके। तदनन्तर

परशुराम ने अपनी तपस्थली को ;जो अब तक आश्रम का रूप ले चुकी थीद्ध ष्श्रीपटलष् नाम दिया। इसके साथ ही उन्होंने यजुर्वेद में वर्णित विधान के अनुसार नरमेध यज्ञ का आयोजन किया। इस यज्ञ के लिए परशुराम ने पूरे भारत के विभिन्न भागों से चारों वेदों के ज्ञाता ब्राह्मणों को निमन्त्रण दिया। यज्ञ लगभग दो वर्ष चला। इसमें पकड़.पकड़ कर लाये गये आततताइयों के सिरों की आहुतियाँ दी जाती थीं। इस यज्ञ की आड़ में पूरी एक सेना परशुराम तैयार कर रहे थे ;परशुराम सम्बन्धी अनेक पुराकथाओं में जो पश्चिमी समुद्रतटीय क्षेत्रों में मिलती हैंए उनमें अनेक सैनिक शिविरों का विवरण मिलता हैए जहाँ उन्होंने बाहर से बुलाकर ब्राह्मण बसाए और स्थानीय निम्न जातियों को संस्कारित कर उन्हें ब्राह्मण बनायाद्ध।ष्

बारह वर्ष तक उन्होंने अपनी इन्हीं सहयोगी सेनाओं के साथ घूम.घूम कर दुष्ट और अन्यायी शासकों के आतंक को समाप्त कियाए फिर लौट कर श्रीपटल में यज्ञ आरम्भ किया। हरिद्वार के कुम्भ की समाप्ति पर परशुराम ने ब्राह्मणों से श्रीपटल चल कर उन्हें वेद विधि.विधान के अनुसार यज्ञ करने का आग्रह किया। उनके आग्रह पर हरिद्वार से ब्राह्मण सदल.बल श्रीपटल की ओर प्रस्थान कर गये थे। इसका वर्णन पुराणों में हैए शतद्रु नदी ही वर्तमान की सतलुज नदी है। इस श्रीपटल नगर का पूर्व भौगौलिक स्वरूप इससे जाना जा सकता है कि वर्तमान में कुल्लू जिला के निरमण्ड और शिमला जिला की तहसील रामपुर बुशहर और इनके निकटवर्ती कुछ क्षेत्र ष्श्रीपटलष् की परिधि में आते हैं। इन्हीं क्षेत्रों में भूण्डा महायज्ञ की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। इस प्रकार भूण्डा पूर्व महासू का विशेष पर्व बन गया।

शतद्रु के किनारे दत्तनगरए नीरथए शिंगलाए शनैरी ;शनैड़द्ध लालसा ;लारसा या लादसाद्ध ढाँडसाए निरमण्ड काओ और मुवैल में हड़प्पा कालीन बस्तियों की खोज हुई है। ये सभी बस्तियाँ परशुराम परम्परा से जुड़ती हैं। हिमाचल प्रदेश के सुप्रसिद्ध लेखक सुदर्शन वशिष्ठ के अनुसार ष्आज परशुराम के मुख्य स्थानों में भूण्डा यज्ञ होता हैए फिर भी मुख्य यज्ञ निरमण्ड में ही होता रहा और इसी का अधिक विवरण भी मिलता है।ष् यज्ञ में नरमुण्डों की आहुति दिए जाने के कारण ही इस स्थान का नाम निर्मुण्ड पड़ गया जो कालांतर में बिगड़ते.बिगड़ते निरमण्ड हो गया।

शतद्रु तट के वनों में घोर तप करने के बाद देवी ने उन्हें कुछ अस्त्र.शस्त्र दियेए जिनसे दुष्टों का संहार हो सके। तदनन्तर परशुराम ने अपनी तपस्थली को ;जो अब तक आश्रम का रूप ले चुकी थीद्ध ष्श्रीपटलष् नाम दिया। इसके साथ ही उन्होंने यजुर्वेद में वर्णित विधान के अनुसार नरमेध यज्ञ का आयोजन किया। इस यज्ञ के लिए परशुराम ने पूरे भारत के विभिन्न भागों से चारों वेदों के ज्ञाता ब्राह्मणों को निमन्त्रण दिया। यज्ञ लगभग दो वर्ष चला। इसमें पकड़.पकड़ कर लाये गये आततताइयों के सिरों की आहुतियाँ दी जाती थीं। इस यज्ञ की आड़ में पूरी एक सेना परशुराम तैयार कर रहे थे ;परशुराम सम्बन्धी अनेक पुराकथाओं में जो पश्चिमी समुद्रतटीय क्षेत्रों में मिलती हैंए उनमें अनेक सैनिक शिविरों का विवरण मिलता हैए जहाँ उन्होंने बाहर से बुलाकर ब्राह्मण बसाए और स्थानीय निम्न जातियों को संस्कारित कर उन्हें ब्राह्मण बनायाद्ध।

बारह वर्ष तक उन्होंने अपनी इन्हीं सहयोगी सेनाओं के साथ घूम.घूम कर दुष्ट और अन्यायी शासकों के आतंक को समाप्त कियाए फिर लौट कर श्रीपटल में यज्ञ आरम्भ किया। हरिद्वार के कुम्भ की समाप्ति पर परशुराम ने ब्राह्मणों से श्रीपटल चल कर उन्हें वेद विधि.विधान के अनुसार यज्ञ करने का आग्रह किया। उनके आग्रह पर हरिद्वार से ब्राह्मण सदल.बल श्रीपटल की ओर प्रस्थान कर गये थे। इसका वर्णन पुराणों में हैए शतद्रु नदी ही वर्तमान की सतलुज है।

श्रीपटल का पूर्व भौगौलिक स्वरूप इससे जाना जा सकता है कि वर्तमान में कुल्लू जिला के निरमण्ड और शिमला जिला की तहसील रामपुर बुशहर और इनके निकटवर्ती कुछ क्षेत्र ष्श्रीपटलष् की परिधि में आते हैं। इन्हीं क्षेत्रों में भूण्डा महायज्ञ की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। इस प्रकार भूण्डा पूर्व महासू का विशेष पर्व बन गया।

राहुल साँकृत्यायन के अनुसार ष्इस यज्ञ में पशुबलि दी जाती थी।ष् वास्तव में ब्रिटिश शासन के समय नरबलि पर प्रतिबंध लगाया जा चुका था। भुण्डा प्रथा का प्रचलन हिमाचल के अन्य बहुत से भागों यथा जामूए दुगाणाए महासूए कुल्लू और सुकेत में भी रहा हैए परम्परा के अनुसार निरमण्ड इस परशुरामी यज्ञ का छटा स्थान है।

निरमण्ड नगर में स्थापित एक गहरी गुफ़ा के ऊपर बने भवन को परशुराम की ष्कोठीष् कहा जाता है। इस गुफ़ा के द्वार पर ताला लगा रहता है। इसके भीतर परशुराम व उनकी माता रेणुका का बहुत सारा

सामान रक्खा हुआ है जो भूण्डा महायज्ञ के अवसर पर निकाला जाता है। हारकोट के अनुसार निरमण्ड में आयोजित 1868 के भुण्डे में रखी गई वस्तुओं की सूची निम्न हैए

40 पौंड वज़न का परशुराम का फ़रसा अथवा कुल्हाड़ाए एक गागर या कमण्डलए एक धनुषए लोहे के कुछ बाण और एक बड़ा कवच आदि वस्तुएँ हैं। निरमण्ड के 1981 के भूण्डे में एक त्रिमुखी आवक्ष प्रतिमाए धनुषए बाणए कमण्डलए माँ रेणुका के चान्दी और सोने के जेवरए इन्द्र.शची आदि देवताओं की अष्टधातु की मूर्तियों के साथ बीस अन्य देवी.देवताओं की मूर्तियाँ भी थींए जो कालान्तर में चोरी कर ली गई थीं। सबसे बड़ी और मुख्य त्रिमुखी आवक्ष सुन्दर मूर्ति में दाहिने मुख में कामदेवए बायें में यम और मध्य में स्वयं परशुराम का प्रतिनिधित्व प्रकट कहा जाता है। इस मूर्ति के मध्य के मुखौटे अर्थात् परशुराम के मस्तक पर तीसरे नेत्र की पुतली के स्थान पर एक विशाल हीरा जड़ा हुआ था। इतना ही बड़ा एक हीरा मूर्ति की ठुड्डी पर भी जड़ा हुआ यूँ प्रतीत होता था मानों पसीना चुहचुहा आया हो और आकर ठुड्डी के नीचे बूँद बन गया हो। इसके नीचे ताम्बे की एक कटोरी टपकते पसीने को एकत्र करने के लिए लगी हुई थी। स्वर्ण और चाँदी मिश्रित धातु से निर्मित यह मूर्ति लगभग तीन फुट ऊँची और चार.साढ़े चार फुट चौड़ी थी।

1868 के भुण्डे के वर्णन में हारकोट ने भी इस मूर्ति की चर्चा की है। इसके अतिरिक्त एक अन्य आवक्ष मूर्ति का विवरण भी हारकोट ने दिया है। हारकोट ने इस दूसरी आवक्ष मूर्ति पर उत्कीर्ण दो आलेखों का विवरण भी दिया हैए जिसमें संस्कृत में बड़े लेख और टाँकरी में छोटे लेख का विवरण है। संस्कृत वाले लेख में 10 आषाढ़ए संवत् सात लिखा है। संवत् सात के उल्लेख की पुष्टि 1919 के भूण्डे के विवरण में शैटलवर्थ ने भी की थी। यह दूसरी प्रतिमा किसी रानी की थीए इससे यह स्पष्ट होता है कि संवत् सात से पूर्व भी भूण्डा महायज्ञ की प्रथा थी। हारकोट ने तो एक शताब्दि पूर्व के भूण्डे का ही उल्लेख किया है।

राहुल साँकृत्यायन के अनुसार यह यज्ञ परशुरामी ब्राह्मणों ने परशुराम जी को प्रसन्न करने के लिए प्रारम्भ किया था। इस यज्ञ के द्वारा वे परशुराम की पूजा.अर्चना करते थे क्योंकि हिमाचल के इस भाग में परशुराम को देवता माना जाता है। हिमाचली संस्कृति के विद्वान डॉण् पद्म चन्द कश्यप के अनुसार देवता परशुराम अपनी कोठी ;गुफ़ाद्ध में बारह वर्ष तक तपस्या करते हैंए इसके बाद जब वे गुफ़ा से बाहर आते हैं तभी भूण्डा यज्ञ का आयोजन किया जाता है और परशुराम उसमें स्वयं भाग लेते हैं। यज्ञ की समाप्ति पर वे पुनः गुफ़ा में लौट जाते हैं। किन्तु कुछ विद्वान इसके विपरीत यह कहते हैं कि भगवान परशुराम ने स्वयं अन्यायी और आततायी शासकों से निपटने के लिए ही इस यज्ञ का शुभारम्भ किया था। निरमण्ड नगर की गहरी गुफा जिसे स्थानीय निवासी कोठी कहकर पुकारते हैंए परशुराम का निवास स्थान था। यहीं परशुराम ने आत्मशान्ति हेतु भुण्डा यज्ञ का आयोजन किया था।13

जनकल्याण के कार्यों का लेख.जोख करने चलें तो उत्तर भारत के अतिरिक्त परशुराम का असम में बहने वाले वृहद नद ब्रह्मपुत्रका सम्बंध भी परशुराम से जुड़ता है। ब्रह्मपुत्र की उत्पत्ति का कारण भी परशुराम को माना जाता है। जनश्रुति के अनुसार तेजु पर्वत पर वे मातृहत्या के पाप से छुटकारा पाने आए थे। यहाँ उन्होंने ब्रह्मपुत्र की स्तुति भी कीए

ष्ब्रह्मपुत्रमहाभाग शन्तनु कुलनन्दनः।

अमोघा गर्भ संभूत पाप लौहित्यं जाह्नवी।।14

तेज पर्वत पर स्थित ब्रह्मकुण्ड के पश्चिमी तट को ध्वस्त करके परशुराम ने इस नद को दिशा दी और जल को मार्ग दिया। धारा परशुराम के पीछे चलने लगी। नीलांचल पर्वत पर पहुँचकर परशुराम ने धारा से कहा कि वे माता कामख्या के दर्शन करके आते हैंए जब तक वे लौटें वह वहीं रुकी रहे और वे कामख्या के दर्शन करने चले गये। पर जलधारा वहाँ रुकी नहीं और आगे बढ़ने लगी। लौटकर परशुराम ने जब धारा को प्रवाहित देखा तो उन्होंने उसे बहुमुखी होने का श्राप दे दिया।

निष्कर्षतः परशुराम से एक परम्परा का आभास होता है। जिसके जन्मदाता जमदग्नि पुत्र परशुराम हुए जो अनन्त शक्तियों के स्वामी थे। परशुराम ने अत्यचारी और निरंकुश क्षत्रियों से शक्ति छीनकर ब्राह्मणों को शासक बनाया। वह खून से सने कुल्हाड़ी को साफ करने की कोशिश किसी पवित्र नदी की तलाश में भारत के दक्षिण की ओर बढ़ते हैं जहाँ वह अपनी कुल्हाड़ी साफ कर सकेंए अंत मेंए वह कर्नाटक के शिमोगा में तीर्थहल्ली गाँव पहुँचते हैं और कुल्हाड़ी साफ करने की कोशिश करते हैं और उन्हें आश्चर्य होता है कि कुल्हाड़ी तुंगा की पवित्र नदी में साफ हो जाती है। पवित्र नदी के प्रति सम्मान के साथए वह एक शिव लिंग का निर्माण करता है और पूजा करता है और मंदिर का नाम रामेश्वर मंदिर रखा जाता है।

जिस स्थान पर परशुराम ने अपनी कुल्हाड़ी साफ की थी उसे रामकुंड कहा जाता है। अर्थात परशुराम ने उत्तर से दक्षिण तक एक ही संस्कृति का प्रसार किया।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Matsya Pun 3.47.213
Mahabharata, Aad.2.3
History of Himachal Sanskrit Literature, Dr. Om Prakash Sharma, Publisher Himachal Kala Sanskriti Evam Bhasha Academy page 31
History of Himachal Sanskrit Literature, Dr. Om Prakash Sharma, Publisher Himachal Kala Sanskriti Evam Bhasha Academy page 29
Folk Gods of Himachal, Dr. Hariram Justa, Vipasha, Year 13 Issue 76, September-October 1998
Mahabharata, Van Parva, Description of the origin of Parashurama and his character
Mahabharata, Van Parva, Description of the origin of Parashurama and his character page no. 308.
Mahabharata, Van Parva, Description of the origin of Parashurama and his character page no. 309.
Himachal Speaks, Aasha Shaili, Kitabghar Prakashan, Allahabad
Mahabharata, Van Parva, Incident of Parashurama losing his shine and regaining his shine page no. 295.
Mahabharata, Van Parva, Parashuram ji losing his glory and regaining it, page no. 295/296
Yugpurush Parashuram, Introduction to the subject, Dr. Om Prakash Sharma, page no. 14, Baba Saheb Apte Memorial Committee, Delhi
Himachal, History of Sanskrit Literature, Dr. Om Prakash Sharma, page no. 30
Yugpurush Parashuram, Introduction to the subject, Dr. Om Prakash Sharma, page no. 124, Baba Saheb Apte Memorial Committee, Delhi